IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी भाषा शिक्षण: नई तकनीकें और प्रविधियाँ

डॉ. ज्योति शर्मा
सह आचार्य
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली, भारत

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग, समय के अभाव और तकनीकी विकास का युग है। इस युग का काम नई तकनीक को अपनाए बिना नहीं चल सकता। हिंदुस्तान जो विश्व के सामने एक बड़े बाजार के रूप में उभरा है इसकी प्राण भाषा हिन्दी भी इस युग की नई तकनीकी प्रविधियों के साथ जुड़ी है। लेकिन सवाल यह है कि हिन्दी भाषा सीखने पढ़ने में तकनीक के साथ आज भारत कितने प्रयोग कर रहा है या भाषायी तकनीकों के इन प्रयोगों के लिए भारत कितना तैयार है? क्या यह भाषा और तकनीक का तालमेल सिर्फ युवाओं द्वारा खड़ा किया गया शगूफा भर है या हिन्दी पढ़ने-पढ़ाने वाले भी इन नई तकनीकों के साथ पेडागॉजिकल, परिवर्तनों के लिए तैयार हैं या नहीं?

वास्तव में भाषा किसी भी समाज की एक बहुमूल्य निधि है। यह वैचारिक, सामाजिक और व्यवहारिक क्रांति की वाहिका है। भाषा के बिना न तो समाज जीवित रह सकता है और विकास तो बहुत दूर की बात है। भारत के संदर्भ में भाषा के सवाल पर बात करते हुए कई पहलू सामने आते हैं। भारत एक बहुभाषायी समाज है, इसलिए हिन्दी की बात करते हुए कई अन्य बोली-बानियों की बातें भी करनी होंगी। वास्तव में ये अन्य बोली-बानियां हिन्दी की ताकत ही है। इनके साथ मिलकर ही हिन्दी विस्तार पाती है।

आज जब हम तकनीकी विस्तार के साथ हिन्दी को जोड़ने की बात कर रहे हैं तो हमें उसके आंतरिक विकास और विस्तार की भी जरूरत है। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ये बोलियां और भाषाएं जिनसे मिलकर हिन्दी बनी है या जिनसे हिन्दी घिरी है, हिन्दी के इस वास्तविक विस्तार में सहायक है।

आज जरूरत है हिन्दी भाषा के इस वास्तविक विस्तार को प्रयोग के धरातल पर उतारने की और तब ही हम अपनी भाषा के तकनीकी तालमेल से बने नए रूप को ग्लोबल आकार दे सकेंगे।

वास्तव में वर्तमान युग की हिन्दी तकनीक की सहगामिनी बनकर हमसे नए शिक्षण शास्त्र की मांग कर रही है। जो शिक्षणशास्त्र पुराने मानदण्डों में परिवर्तन चाहता है। पुराने मानदण्ड जहाँ बोलचाल की भाषा और लेखन की भाषा यानि व्यवहार की भाषा और सिद्धांत की भाषा एक दूसरे से अलग थे। अब व्यवहार की भाषा ने सिद्धांत की भाषा को पीछे छोड़ तकनीक पर अपनी पकड़ बनाई है। अब व्यवहार की यह भाषा तीखी, तेवरपूर्ण और तीव्रता से पापुलर होती जा रही है।

ब्लॉग, फेसबुक, व्हॉट्स एप, एस.एम.एस., टीवी, रेडियो और रंगमंच ने ऐसी हिन्दी को जन्म दिया है जो व्यवहारिकता के निकट है। जिसमें रचनात्मकता, मौलिकता और मूल बात कहने की ताकत है। सिद्धांतों का जंजाल या जमावड़ा नहीं।

पिछले दिनों मुझे स्विट्जरलैण्ड के लोसान विश्वविद्यालय में पढ़ाने का मौका मिला। विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में लोसान विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों से जब मेरी मुलाकात हुई तो मेरे लिए बड़ी चुनौती थी हिन्दी को एक रोचक अंदाज में उन छात्रों को सिखाना। उनमें से अधिकांशतः फ्रेंच भाषी थे, कुछ इटेलियन या जर्मन भाषी। हिन्दी का 'क' 'ख' तो उन्होंने सीखा था लेकिन हिन्दी भाषा और भाषायी तेवर सीखने की इच्छा उनमें थी। परन्तु सवाल था कि इस भाषा को इसके पूरे तेवर के साथ और वो भी मजेदार अंदाज में छात्रों तक कैसे पहुंचाया जाए? वहाँ मेरा साथ दिया हिन्दी फिल्मों और यूट्यूब पर उपलब्ध् हिन्दी वीडियोस ने हिन्दी के बहुवचन रूपों को सिखाने के लिए जब मैंने 'एक चिड़िया अनेक चिड़िया' का सहारा लिया तो छात्रों को बहुवचन के साथ-साथ चिड़िया, गिलहरी, दाना आदि शब्द सीखते देर नहीं लगी। छात्रों ने खुद ही इन शब्दों के प्रयोग कर नए-नए वाक्य बनाने शुरू कर दिए। फिर एक-एक वाक्य जोड़ इन विषयों पर अपने अनुभव साझा करने शुरू किए। कुछ विद्यार्थियों ने तो अलग-अलग विषय पर अपने-अपने अनुभव के अनुसार पी.पी.टी. भी बनाई और प्रस्तुत की।

फिर हमारा हौसला जैसे हिंदी को पढ़ने और पढ़ाने के प्रति बुलन्द हो गया। तकनीक के रास्ते आसान बनी राह ने जैसे हिंदी पढ़ने के हमारे इरादों को नए पंख दे दिए। हमने 'आइ.एम.कलाम', 'जोधा अकबर', 'लगे रहो मुन्नाभाई' फिल्में साथ-साथ देखी और उन पर बात की।

'आइ एम कलाम' फिल्म को चुनने के पीछे मेरा इरादा फ्रेंच भाषी समुदाय को फ्रेंच हीरोइन जो हिंदुस्तान में आकर हिंदी बोलती सीखती है और फिर फ्रेंच और हिंदी सीखने-सिखाने की जो प्रक्रिया बच्चे और फिल्म की अभिनेत्री ने फ्रेंच मूल की है, उसके बीच चलती है, उसके प्रति प्रेरित-प्रोत्साहित करना था। फिल्में देखते हुए विद्यार्थियों ने जैसे पूरे दिलचस्प, रोचक अंदाज में पूरे तेवर के साथ हिंदुस्तान को देखा। उन्होंने जोधा अकबर देखते हुए राजपुताना और मुगलों के बारे में पूछा। हिंदू और मुस्लिमों के रीति-रिवाज और त्यौहारों के बारे में जिज्ञासा जाहिर की। मुस्लिम त्यौहारों पर बात करते हुए हम ईद तक पहुंचे और ईद से प्रेमचंद की कहानी ईदगाह तक। कहानी को पढ़ समझकर विद्यार्थियों ने कहानी में बहुत रूचि ली और हमने मिलकर कहानी पर आधरित एक स्क्रिप्ट तैयार की तथा अंततः इस कहानी का मंचन हुआ और पूरे संगीत, प्रकाश, परिधान-योजना के साथ विद्यार्थियों ने बड़ी लगन से यह नाटक तैयार किया, प्रस्तुत किया और बहुत प्रशंसा प्राप्त की, साथ ही बहुत सीखा।

लोसान विश्वविद्यालय में पढ़ाते हुए मैंने महसूस किया कि वास्तव में आज हिंदी भाषा शिक्षण में नई तकनीकी प्रविधियों को अपनाने की नितान्त आवश्यकता है। तकनीक की सुविधा ने हमारे द्वारा कही जा रही जानकारी को बेहद सहज, सरल, सरस और सुविधजनक रूप में समझाने का मंच हमें दिया है।

इस तकनीकी सुविधा के साथ हम समय और स्थान की सीमाओं को तोड़ते हुए विचार साझा कर सकते हैं, सूचनाएं संप्रेषित कर सकते हैं और जानकारियां बांट सकते हैं। हिंदी भाषा शिक्षण और तकनीकी तालमेल का प्रयोग करते हुए भारत सरकार ने भी कई वेबसाइट्स बनाई हैं। जिनमें से एक है- www.rajbhasha.nic.in

इस साइट पर लागइन करने से आपको तीन स्तर पर भाषा सीखने को मिलेंगी -

1. प्रबोध
2. प्रवीण
3. प्राज्ञ

प्रबोध में बिल्कुल छोटे माडल्स हैं। वर्ण, शब्द और फिर छोटे वाक्य। जैसे - राम ..... जाता है। सीता ..... खाती है।

प्रवीण में और फिर प्राज्ञ में भाषा के प्रयोगों का स्तर बढ़ता जाता है। यहां आप सुनकर भी हिंदी सीख सकते हैं। आपके उच्चारण को सही करने के लिए सही उच्चारण को सुनें। चित्रों, सम्बंधित शब्दों आदि के माध्यम से आसान तरीके से हिंदी सीखने की व्यवस्था है। साथ ही शब्द संसार को जानने के लिए चित्रों, वीडियो गेम्स, आदि का रोचक तरीका अपनाया गया है। जैसे-जैसे आप प्रबोध से प्रवीण और प्राज्ञ स्तर की ओर बढ़ते हैं आपका हिंदी भाषा संबंधी ज्ञान भी प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ होता जाएगा।

इसके अतिरिक्त भी ऐसी कई वेबसाइट्स और बड़े प्रोजेक्ट्स हैं जो हिन्दी भाषा शिक्षण को तकनीकी आधर देकर इसे सर्वसुलभ बना रहे हैं। इसमें से एक है – ILLL -जीवन पर्यन्त शिक्षण संस्थान INSTITUTE OF LIFE LONG LEARNING इसकी वेबसाइट पर ज्ञान की तमाम शाखाओं के लिए सामग्री उपलब्ध् है। यह बी.ए. व एम.ए. स्तर के विद्यार्थियों के लिए तैयार सामग्री है। साथ ही इसकी साइट पर हिन्दी के वरिष्ठ विद्वानों और आलोचकों के ई-लेक्चर भी संग्रहित किए गए हैं। इसका लिंक है - (www.vle, in)एक अन्य महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट जो उच्च शिक्षा में हिन्दी के उत्थान पर काम कर रहा है – E-PG Pathshala है। यहाँ मूल रूप से एम.ए. के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी सामग्री तैयार की गई है। वीडियो लेक्चर भी संकलित किए गए हैं।

तकनीक की सुविधा ने अब तमाम समय और स्थान से जुड़ी दुविधाओं को खत्म कर दिया है। अब ऑनलाइन ई-लेक्चर के जरिए एक विश्वविद्यालय की कक्षाओं का लाभ दूसरे विश्वविद्यालय के विद्यार्थी भी उठा सकते हैं। भारत के संदर्भ में अभी इस सुविधा का गांव-देहात के बच्चों तक पहुंचने का इंतजार है। हालांकि वहाँ भी अब लगातार इंटरनेट के बढ़ते कदमों के कारण विद्यार्थी हिन्दी की उन पत्र-पत्रिकाओं तक पहुंच जाते हैं जो उन्हें केवल शहरों में ही मिलती थीं।

लगातार पत्रिकाओं ने भी अपने कदम इस तकनीकी संसार की तरफ बढ़ाए हैं। नटरंग जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका ई-रूप में मौजूद है। कथाक्रम, कथादेश और अन्य कई पत्रिकाएं अब ई-रूप में ऑनलाइन अपनी मौजूदगी दर्ज करने की दिशा में आगे बढ़ रही है।यहाँ तक कि NotNul वेबसाइट http://www.notnul.com पर नीलाभ और गरिमा श्रीवास्तव जी के प्रयासों से 100 से भी अधिक हिंदी की पुरानी , प्रचलित और प्रसिद्ध पत्रिकाएं ऑनलाइन उपलब्ध हैं| हंस , नया ज्ञानोदय , तद्भव , वागर्थ , लमही , दलित दस्तक , पाखी , व्यंग्य यात्रा आदि अति महत्वपूर्ण पत्रिकाओं को आप एक ही स्थान से ऑनलाइन प्राप्त कर सकते

हैं |5000 से अधिक महत्वपूर्ण पुस्तकों को डिजिटल रूप में यहाँ प्राप्त किया जा सकता है |

तकनीक और हिंदी भाषा के तालमेल में एक अति महत्वपूर्ण कार्य श्री ललित कुमार जी का कविताकोश है। www.kavitakosh .org में आप 4000 से ज़्यादा अत्यधिक महत्वपूर्ण हिंदी के कवियों की कविताओं को मुफ्त प्राप्त कर सकते हैं|

हिन्दी शिक्षण में तकनीक का एक बड़ा योगदान ई-बुक्स है। फ्लिपकार्ट या अमेजन ने किताबों के ई-रूप उपलब्ध कराए हैं। वर्तमान में फ्लिपकार्ट पर 1, 25, 72, 442 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। जिनमें से तकरीबन 30, 000 से ज्यादा हिन्दी की किताबें हैं। इसी प्रकार अमेजन डाट इन पर 1, 87, 26, 047 जिनमें से करीब 35, 000 किताबें हिन्दी की हैं। अमेजन के किंडल गजट के साथ अब आसानी से बहुत सी किताबों को किंडल फॉरमेट में पढ़ा जा सकता है। साथ ही ई-बुक पोर्टल के माध्यम से आप लेखक, पाठक और प्रकाशक की प्रतिक्रियों और संवादों को भी साझा कर सकते हैं। अर्थात् आप किताब पढ़कर बेझिझक अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं। सार-संक्षेप पढ़कर किताब डाउनलोड की जा सकती है या बुकमार्क करके रखी जा सकती है।

आप किसी विषय पर यदि अपनी साझा विचार गोष्ठी जैसी कोई जगह बनाना चाहते हैं तो तकनीक ने हमें वह सुविधा भी प्रदान की है। ब्लॉग या वेब पोर्टल के जरिए हम लगातार विभिन्न विषयों पर बातचीत कर सकते हैं, पढ़-लिख सकते हैं और एक-दूसरे को प्रेरित-प्रोत्साहित कर सकते हैं।बालेन्दु दाधीच का www.balendu.com इसका सक्रिय उदाहरण है| लोसान विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ भी मैंने एक साझा ब्लाग बनाया। वहाँ से लौटने के बाद भी हमारे संवाद इस ब्लाग के जरिए जारी है। तकनीक की मदद से हिन्दी शिक्षण का काम लगातार हो रहा है। लोसान की कक्षाओं में हिन्दी फिल्मों, गीतों, पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों और यू ट्यूब पर जिस भारत को मेरे छात्रों ने देखा उसे अपनी आंखों से देखने की ललक उन्हें भारत खींच लाई। कुछ विद्यार्थियों ने बनारस के घाट, दिल्ली और आगरा के आसपास के इलाकों का भ्रमण किया। भारत यात्रा पूरी होने पर उन्होंने हिन्दी में अपने यात्रानुभव लिखकर मुझे भेजे। यह सामग्री हमारे ब्लॉग पर पोस्ट की गई।

तकनीक की सुविधा को महसूस करने का मेरा एक अद्भुत अनुभव रहा, जब मैं मार्कण्डेय की कहानी 'हंसा जाई अकेला' पर अपने दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ काम कर रही थी। काम की शुरूआत सें हमें कहानी टेक्स्ट रूप में चाहिए थी। बहुत ढूंढने पर भी लाइब्रेरी में कहानी नहीं मिली। प्रकाशक वितरक से कहा गया तो पता चला कि कहानी के

प्रिंट बाजार में उपलब्ध नहीं हैं। तब मैंने ऑनलाइन इस कहानी को ढूंढा और बड़ी आसानी से यह कहानी मुझे हिन्दी समय.कॉम पर मिल गई। हमारा पढ़ने-पढ़ाने का रास्ता आसान हो गया। बाद में मैंने इस कहानी पर ।LLL के लिए शोध पाठ भी तैयार किया। आज कविता कोश, गद्यकोश, हिन्दी समय, हिन्दी कुंज आदि तमाम वेबसाइट्स पर हिन्दी पाठ उपलब्ध हैं, जिन्होंने न केवल हिन्दी की सामग्री को सुविधाजनक रूप में सर्वसुलभ बनाया है, बल्कि इन रचनाओं को अमर भी कर दिया है।

हिन्दी ब्लॉग पर हिंदुस्तान की रसोई सामग्री से लेकर विज्ञान के नए आविष्कारों तक की चर्चा है। सुकरात से लेकर न्यूटन के विषय में तमाम ज्ञान के क्षेत्रों की चर्चा आप हिन्दी में ब्लॉगों पर प्राप्त कर सकते हैं। लोग लिख रहे हैं, लगातार हिन्दी भाषा में। यही तकनीक का सबसे बड़ा योगदान है। हालांकि इंटरनेट पर हिन्दी में लेखन को लेकर कई दिक्कतें थीं। लोग रोमन की-बोर्ड में लिखने के आदी रहे हैं लेकिन यूनिकोड के आगमन से देवनागरी में लिखने पढ़ने की राहें आसान हुई हैं। अब तो हिन्दी में लेखन की सुविधा एंड्रॉयड फोन में भी उपलब्ध है। जिसने हिन्दी के विस्तार में योगदान दिया है। स्मार्टफोन, टैबलेट में हिन्दी पढ़ी जा सकती है तो गूगल हिन्दी इनपुट के ज़रिये रोमन कीबोर्ड से हिंदी लिखी जाती है। सीडैक ने हिंदी के मानक तरीके ; इन्स्क्रिप्ट से हिंदी टाइप एप जारी किया है। अब हर नए कंप्यूटर आपरेटिंग सिस्टम ;विंडोज, मैकिन्टोश, लिनक्स आदि- में यूनिकोड की कृपा से हिन्दी देवनागरी पहले से ही विद्यमान है। साथ ही अगर आप हिन्दी में टाइपिंग बिल्कुल नहीं जानते लेकिन हिन्दी में ब्लाग की शुरूआत करना चाहते हैं तो आप्टीकल कैरेक्टर रिक्गनिशन साफ्टवेयर भी मौजूद है जो पहले से टाइप प्रति या चित्रों को अपलोड के लिए तैयार करता है। साथ ही अब आप बोल कर भी टॉक टाइपर के माध्यम से हिन्दी लिख और सीख सकते हैं।

भाषा का मुख्य काम है - बोलना, सुनना, लिखना और पढ़ना। तकनीक ने आज इन चारों कामों में इजाफा किया है। हिन्दी बोलने, सुनने की सुविधाएं और दिलचस्पियां पैदा की है. . फिल्मों, गीतों, OCR आदि के माध्यम से लिखने तथा पढ़ने को विस्तार दिया है . ब्लॉग, ई-बुक, व्हॉट्स एप, फेसबुक आदि के जरिए।

आरंभ में फेसबुक केवल मनोरंजन का माध्यम भर बनकर आया था, लेकिन आज इसी फेसबुक पर हिन्दी के गंभीर विचार-विमर्श देखे जा सकते हैं। व्हॉट्स एप पर हिन्दी में विचार साझा करने, बात करने या कोई पाठ्य सामग्री शेयर करने की जो प्रवृत्ति बढ़ रही है वह भी सुखदायी है।

ई-मेल और अब ई-कवि सम्मेलनों के जरिए भी हम ग्लोबल हिन्दी की तरफ बढ़ रहे हैं। हिन्दी शिक्षण में इन तमाम तकनीकी प्रविधियों का महत्व आज अस्वीकारा नहीं जा सकता।

हां! एक सवाल भाषा की विद्रूपता का जरूर खड़ा होता है कि भाषा की शुद्धता कहीं गायब हो रही है। लेकिन साथ ही सुकून यह भी है कि भाषा निरंतर विस्तार और गहराई पा रही है। ऐसे में हमें ध्यान बस यही रखने की जरूरत है कि शुद्धतावादी एप्रोच में भाषा को आगे बढ़ने से रोकना नहीं है लेकिन साथ ही भाषा के मुहावरों और चरित्रों को बनाए और बचाए रखना है।

अपने विदेश अध्यापन कार्यकाल के दौरान इटली के प्रोपेफसर अलेजेन्द्रा जी से मुलाकात के साथ मुझे पता चला कि भारत के बाहर हिन्दी शिक्षण जगत से जुड़े लोगों का यह मानना है कि हिंदुस्तानी हिन्दी जगत के लोग विदेशों में हिन्दी पढ़ने-पढ़ाने वालों से एक दूरी बनाकर रखते हैं। साथ ही विदेशी हिन्दी शिक्षकों को कमतर करके आंकते हैं जबकि उनके पास भी हिन्दी शिक्षण का एक नज़रिया है और हिन्दी के प्रति समर्पण है। इस शिकायत का मूल कारण संवादहीनता है। आज तकनीक के सहयोग से हिन्दी जगत के हिंदुस्तान से बाहर बैठे विद्वानों से भी संवाद संभव है। उनकी गतिविधियों से हिंदुस्तानी हिन्दी प्रेमी और हिंदुस्तान की हिन्दी शिक्षण गतिविधियों से विदेश में बैठे हिन्दी प्रेमी अवगत हो रहे हैं।

मेरा निजी अनुभव दूरदर्शन के माध्यम से हिन्दी शैक्षणिक गतिविधियों की चर्चा-परिचर्चा का भी रहा है। साथ ही, एन.सी.ई.आर.टी. के लिए हमने ई-पाठ सामग्री तैयार की। ये तमाम अनुभव यही कहते हैं कि यदि हिन्दी शिक्षण को आगे बढ़ाना है, सहज और सुगम बनाना है तो तकनीक का सहारा लिए बिना यह संभव नहीं। तकनीक एकबारगी थोड़ी मुश्किल लग सकती है क्योंकि नए रास्ते हमेशा कठिन लगते हैं। लेकिन यह भी तय है कि तकनीक की यह नई राह हिन्दी शिक्षण को बेहद आसान और दिलचस्प बना रही है। अब सोचना हमें है कि हम तकनीकी प्रविधियों के साथ हिन्दी के लिए नई मंजिल तय करेंगे या तकनीक से घबराकर भाग खड़े होंगे। डा. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी के शब्दों में-

हिन्दी आज चाहती हमसे
हम सब निश्छल अंतस्तल से,
सहज, विनम्र, अथक यत्नों से
मांगें न्याय आज से, कल से।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची :-

1. हिन्दी भाषा और इसकी शिक्षण विधियाँ: हिन्दी भाषा और शिक्षण विधियों की परिचायक, पाण्डेय श्रुतिकान्त, पी. एच. आइ. प्रकाशन। ISBN: 978-81-203-5003-8
2. शिक्षा मनोविज्ञान, मंगल एस. के., पी. एच. आइ. प्रकाशन, ISBN: 978-81-203-3280-5
3. हिंदी शिक्षण संकल्पना और प्रयोग, बाछोतिया हीरालाल, आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, सं. -2006।
4. हिंदी शब्द मीमांसा, शास्त्री किशोरीदास वाजपेयी, मीनाक्षी पप्रकाशन मेरठ, 1968.
5. हिंदी भाषा, दास श्यामसुन्दर, इंडियन प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, प्रयाग, 1967।
6. भाषा, ब्लूमफील्ड, दास मोतीलाल बनारसी, दिल्ली।
7. हिंदी का व्यवहारिक ज्ञान, कालरा सुधा, कालरा अशोक, केंद्रीय हिंदी संस्थान प्रकाशन, 1987
8. हिंदी शिक्षण: नए भविष्य की तलाश, सं. शम्भुनाथ, केन्द्रिय हिंदी संस्थान आगरा। 2008।

पत्रिकाएँ :-

1. गगनांचल: दसवां विश्व हिंदी सम्मलेन विशेषांक, अंक- 4-5, जुलाई-अक्टूबर 2015।

वेब लिंक :-

1. http://www.rajbhasha.nic.in
2. http://vle.du.ac.in/
3. https://en.wikipedia.org/wiki/Optical_character_recognition
4. https://en.wikipedia.org/wiki/Language_pedagogy